RNA : Real News Analysis

DAILY CURRENT AFFAIRS

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण

DATE
जून
18
2025

Key Point

1. National News
2. International News
3. Govt. Mission, Apps
4. Awards & Honours
5. Sports News
6. Economic News
7. Newly Appointment
8. Defence News
9. Important Days
10. Technology News
11. Obituary News
12. Books & Authors

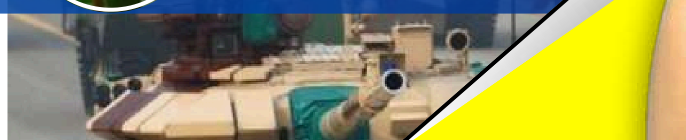

By Ankit Avasthi Sir

बंगाल की खाड़ी में भारत की कठिन संतुलन नीति / India's uneasy balancing act in the Bay of Bengal

संदर्भ:

भारत की बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में आर्थिक भागीदारी अब एक नए चरण में प्रवेश कर चुकी है, जिसे पूर्वी बंदरगाहों के माध्यम से **कार्गो आवाजाही में वृद्धि** और हालिया **BIMSTEC समुद्री सहयोग समझौते** के रूप में देखा जा रहा है, जो क्षेत्रीय व्यापार को प्रोत्साहित करता है।

- हालांकि, इसी बीच **बांग्लादेश** को दिए गए ट्रांजिट विशेषाधिकारों को अचानक वापस लेने के भारत के निर्णय ने तनाव उत्पन्न कर दिया है, जिससे क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण की प्रक्रिया पर सवाल उठने लगे हैं।

बंगाल की खाड़ी में भारत की समुद्री प्रगति और क्षेत्रीय व्यापार सहयोग-

समुद्री व्यापार में वृद्धि:

- भारत के पूर्वी बंदरगाहों – विशाखापत्तनम, पारादीप और हल्दिया – से गुजरने वाले कार्गो की मात्रा में निरंतर वृद्धि देखी गई है।
- यह वृद्धि बंगाल की खाड़ी में व्यापार एकीकरण और कनेक्टिविटी को दर्शाती है।

BIMSTEC समुद्री समझौता:

- इस वर्ष हस्ताक्षरित BIMSTEC समुद्री परिवहन सहयोग समझौता कस्टम प्रक्रियाओं के सामंजस्य और बंदरगाह लागत को कम करने का प्रयास करता है।
- यह समझौता सीमापार व्यापार को सुगम बनाने और BIMSTEC देशों के बीच समुद्री परिवहन सहयोग को प्रोत्साहित करने की दिशा में अहम कदम है।

नीतिगत प्रोत्साहन:

- **सागरमाला कार्यक्रम** और **GST आधारित प्रोत्साहन** के तहत भारत में तटीय शिपिंग और लॉजिस्टिक्स को बढ़ावा मिला है।
- ये पहलें भारत की **"एक्ट ईस्ट नीति"** के तहत क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण और BIMSTEC मूल्य श्रृंखलाओं को मजबूत करने में सहायक हैं।

व्यापारिक आशावाद:

- वर्षों बाद बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में व्यापार एकीकरण ने सकारात्मक गति पकड़ी है।
- यह BIMSTEC के प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में प्रगति का संकेत है और **फ्री ट्रेड एग्रीमेंट (FTA)** की संभावनाओं को भी बल देता है।

क्षेत्रीय बंदरगाह निर्भरता:

- नेपाल, भूटान और म्यांमार जैसे छोटे देशों की भारत के बंदरगाहों पर भारी निर्भरता है।
- इससे भारत की क्षेत्रीय रणनीतिक स्थिति मजबूत होती है और BIMSTEC ढांचे में आंतरिक व्यापार को बढ़ावा मिलता है।
- अब कनसेशनल पोर्ट ड्यूज़ (छूट शुल्क) की चर्चा भी हो रही है ताकि व्यापार और सहयोग और सशक्त हो सके।

भारत-बांग्लादेश हालिया तनाव – मुख्य बिंदु

- **ट्रांसशिपमेंट सुविधा रद्द:** भारत ने अचानक बांग्लादेश को अपने बंदरगाहों से निर्यात करने की अनुमति वापस ली, कारण बताया गया – लॉजिस्टिक भीड़।
  बांग्लादेश ने इसे चीन से बढ़ती नजदीकी और भारत के पूर्वोत्तर राज्यों को "लैंडलॉक्ड" कहने की प्रतिक्रिया माना।
- **तत्काल आर्थिक प्रभाव:** बांग्लादेश की रेडीमेड गारमेंट्स इंडस्ट्री (जो 85% निर्यात का हिस्सा है) को अब वैकल्पिक मार्गों (श्रीलंका/दक्षिण-पूर्व एशिया) से व्यापार करना पड़ रहा है, जो महंगे और धीमे हैं।
- **व्यापार प्रतिबंधों में बढ़ोतरी:** मई 2025 में भारत ने बांग्लादेश की 7 वस्तुओं (जैसे वस्त्र, प्लास्टिक, प्रोसेस्ड फूड) को सिर्फ खास समुद्री बंदरगाहों से ही प्रवेश की अनुमति दी।

चुनौतियाँ:

- पड़ोसी देशों के साथ विश्वास में कमी
- आर्थिक गलियारों का राजनीतिकरण
- BIMSTEC की एकता पर खतरा
- क्षेत्र में चीन को रणनीतिक अवसर
- आपूर्ति श्रृंखला (Supply Chain) में बाधा
- भारत की सॉफ्ट पावर और कूटनीतिक छवि को क्षति

विश्वसनीयता और भविष्य की संभावनाएं –

ढांचा बनाम विश्वास (Infrastructure vs Trust): भले ही भारत के पास बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर और लॉजिस्टिक सुविधाएं हों, क्षेत्रीय नेतृत्व के लिए **विश्वसनीयता और विश्वास** ज़रूरी है।

चुनौतियों में अवसर: बंगाल की खाड़ी क्षेत्र एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है, जहाँ BIMSTEC फ्री ट्रेड एग्रीमेंट जैसे प्रस्तावों के ज़रिए मजबूत व्यापारिक एकीकरण की संभावना है।

- लेकिन अगर व्यापारिक सहयोग राजनीतिक उतार-चढ़ाव के अधीन रहा, तो ये संभावनाएं बाधित हो सकती हैं।

शिपकी ला दर्रा / Shipki La Pass

संदर्भ:

हिमाचल प्रदेश में पर्यटन को बढ़ावा देने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाते हुए **शिपकी ला दर्रे** को घरेलू पर्यटकों के लिए खोला गया है। किन्नौर जिले में समुद्र तल से **3,930 मीटर की ऊंचाई** पर स्थित यह दर्रा न केवल सीमा पर्यटन को प्रोत्साहित करेगा, बल्कि भारत-चीन के पारंपरिक व्यापार मार्ग को पुनर्जीवित करने की दिशा में भी एक महत्वपूर्ण पहल साबित हो सकता है।

शिपकी ला दर्रा: भारत-तिब्बत सीमा का ऐतिहासिक व्यापारिक मार्ग

1. **स्थान और भौगोलिक महत्व:**
   - शिपकी ला भारत-तिब्बत सीमा (LAC) पर स्थित एक मोटरेबल माउंटेन पास है।
   - यह भारत के उच्चतम वाहन-योग्य दर्रों में से एक है।
2. **सतलुज नदी का मार्ग:**
   - **सतलुज नदी** (तिब्बत में लांगचेन जंगबो) भारत में यही दर्रा पार करके प्रवेश करती है।
3. **ऐतिहासिक नाम और परिवर्तन:**
   - इसे पहले **पेमा ला** या **शेयर्ड गेट** के नाम से जाना जाता था।
   - **1962 के बाद** ITBP (भारत-तिब्बत सीमा पुलिस) ने इसका नाम बदलकर **शिपकी ला** रखा।
4. **ऐतिहासिक व्यापारिक महत्व:**
   - 5वीं शताब्दी से यह एक **महत्वपूर्ण भारत-तिब्बत व्यापार मार्ग** रहा है।
   - यह मार्ग 1962 के भारत-चीन युद्ध, डोकलाम गतिरोध और कोविड-19 महामारी के बाद से बंद है।
5. **व्यापारिक वस्तुएं:**
   - **तिब्बत से आयात:** ऊन, पशुधन, याक उत्पाद, धार्मिक वस्तुएं, खनिज।
   - **भारत से निर्यात:** अनाज, मसाले, तंबाकू, लकड़ी और धातु उपकरण।

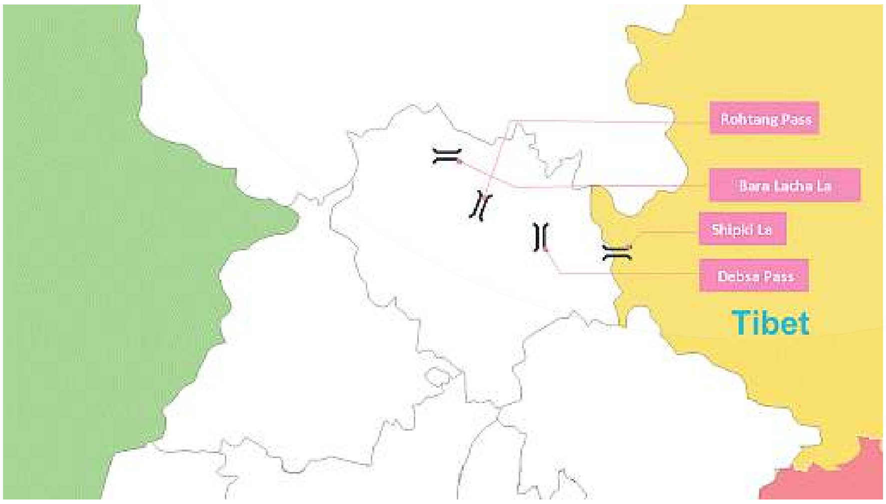

शिपकी ला दर्रा: व्यापार, संस्कृति और रणनीति का संगम

आर्थिक प्रभाव:
- शिपकी ला के खुलने से स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलने की संभावना है।
- मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू ने कहा कि इससे पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा और सीमा गांवों के लिए रोजगार के अवसर पैदा होंगे।
- स्थानीय व्यापारी व्यापार पुनः शुरू करने से राजस्व और क्षेत्रीय विकास की संभावना बढ़ती है।

सांस्कृतिक आदान-प्रदान:
- यह दर्रा केवल व्यापार मार्ग नहीं, बल्कि सांस्कृतिक सेतु भी है।
- भारत और तिब्बत के बीच ऐतिहासिक व्यापार संधियां और लद्दाख-तिब्बत के पुराने संबंध इस मार्ग की सांस्कृतिक महत्ता को रेखांकित करते हैं।
- इसके पुनरुद्धार से सांस्कृतिक जुड़ाव और लोक विरासत को नया जीवन मिल सकता है।

भविष्य की संभावनाएं:
- दर्रे को लेकर केंद्र सरकार से चीन से व्यापारिक संवाद की मांग की जा रही है।
- यह क्षेत्र पर्यटन, व्यापार और सांस्कृतिक संपर्क के लिए अत्यधिक संभावनाओं से भरा है।
- स्थानीय समुदाय इस पहल से मिलने वाले लाभों को लेकर आशावान है।

रणनीतिक महत्व:
- LAC के पास स्थित होने से इसका सुरक्षात्मक और रणनीतिक महत्व और बढ़ जाता है।
- यह दर्रा कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए एक वैकल्पिक मार्ग बन सकता है, जिससे धार्मिक पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा।
- इसके खुलने से राष्ट्रीय सुरक्षा और कूटनीति के दृष्टिकोण से भी भारत को लाभ हो सकता है।

लंग जीन FOXP4 का लॉन्ग कोविड से जुड़ाव पाया गया / Lung Gene FOXP4 Linked to Long COVID

संदर्भ:

कोविड-19 के दीर्घकालिक लक्षणों से जुड़े कारणों की खोज में एक बड़ी सफलता मिली है। स्वीडन के करोलिंस्का इंस्टिट्यूट और फिनलैंड के इंस्टीट्यूट फॉर मॉलिक्यूलर मेडिसिन के शोधकर्ताओं के नेतृत्व में किए गए एक अंतरराष्ट्रीय अध्ययन में वैज्ञानिकों ने एक ऐसे **जीन वेरिएंट** की पहचान की है, जो कोविड के लंबे समय तक बने रहने वाले लक्षणों से जुड़ा है। यह वेरिएंट **FOXP4 जीन** के निकट स्थित है, जो फेफड़ों की कार्यप्रणाली को प्रभावित करने के लिए जाना जाता है। यह अध्ययन प्रतिष्ठित जर्नल *Nature Genetics* में प्रकाशित हुआ है।

लॉन्ग कोविड (Long COVID): कोविड के बाद की लंबी जटिलताएं

परिभाषा:

- लॉन्ग कोविड उन लक्षणों को कहते हैं जो कोविड-19 संक्रमण से उबरने के हफ्तों या महीनों बाद भी बने रहते हैं।
- इसे पोस्ट-कोविड कंडीशन या पोस्ट-एक्यूट सीक्वेल ऑफ SARS-CoV-2 (PASC) भी कहा जाता है।

WHO के अनुसार:

- विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) के मुताबिक, Long COVID के सबसे सामान्य लक्षण हैं:
    - थकान (Fatigue)
    - सांस लेने में तकलीफ (Breathlessness)
    - मानसिक एकाग्रता में कमी (Brain Fog या Mental Focus Issues)

उपचार की स्थिति:

- वर्तमान में Long COVID के लिए कोई विशेष या मान्यता प्राप्त दवा उपलब्ध नहीं है।
- उपचार मुख्यतः लक्षण आधारित है – जैसे फिजियोथेरेपी, मानसिक स्वास्थ्य सहायता, पोषण और विश्राम पर ध्यान देना।

लॉन्ग कोविड से जुड़ा एक महत्वपूर्ण जीन: FOXP4 की भूमिका-

मुख्य निष्कर्ष: **FOXP4 जीन** को **लॉन्ग कोविड** से जोड़ने वाला एक मजबूत संबंध पाया गया है, विशेष रूप से **क्रोमोसोम 6** के एक खास हिस्से में।

विशेष वेरिएंट की पहचान:

- इस क्षेत्र में स्थित एक जीन वेरिएंट, **rs9367106**, लॉन्ग कोविड के जोखिम को बढ़ाता है।
- जिन लोगों में इस वेरिएंट का **"C" संस्करण** मौजूद था, उनमें लॉन्ग कोविड के लक्षणों की संभावना **63% अधिक** पाई गई।

गंभीर संक्रमण की आवश्यकता नहीं:

- यह जीन वेरिएंट उन लोगों में भी लॉन्ग कोविड का जोखिम बढ़ाता है जिन्हें कोविड के दौरान अस्पताल में भर्ती नहीं होना पड़ा।
- इसका मतलब है कि लॉन्ग कोविड का खतरा केवल गंभीर संक्रमण तक सीमित नहीं है।

विभिन्न आबादी में विविधता: यह वेरिएंट विभिन्न जनसंख्या समूहों में अलग-अलग मात्रा में पाया गया:

- गैर-फिनिश यूरोपीय (non-Finnish Europeans): लगभग 1.6%
- पूर्वी एशियाई (East Asians): लगभग 36%

FOXP4 जीन: फेफड़ों और इम्युनिटी से लॉन्ग कोविड तक

फेफड़ों में सक्रिय भूमिका:

- **FOXP4 जीन** का संबंधित वेरिएंट फेफड़ों के ऊतकों में अत्यधिक सक्रिय डीएनए हिस्से में पाया गया है।
- यह संकेत देता है कि यह वेरिएंट फेफड़ों की कार्यक्षमता को प्रभावित कर सकता है।

टाइप-2 एल्वियोलर कोशिकाओं में उच्च सक्रियता:

- FOXP4 जीन विशेष रूप से **type 2 alveolar cells** में सक्रिय होता है, जो:
    - फेफड़ों की एयर सैक्स (alveoli) को खुला रखने,
    - तरल पदार्थों को साफ करने,
    - और क्षतिग्रस्त ऊतकों की मरम्मत में सहायक होते हैं।
- ये कोशिकाएं वायरस (जैसे SARS-CoV-2) से लड़ने में **प्रतिरक्षा प्रतिक्रिया (immune response)** का भी हिस्सा होती हैं।

FOXP4 का उच्च स्तर, अधिक खतरा:

- जिन लोगों के खून में संक्रमण के ठीक होने के बाद भी FOXP4 का स्तर हल्का-सा ऊंचा रहा,
    - उनमें लॉन्ग कोविड होने की संभावना दो गुना से अधिक पाई गई।

भारत में अनुसंधान को आसान बनाने के लिए नीतिगत सुधार / Policy Reforms for Ease of Research in India

संदर्भ:

केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री ने भारत में नवाचार, अनुसंधान और विज्ञान को प्रोत्साहित करने के लिए व्यापक नीतिगत सुधारों की घोषणा की है। इन सुधारों का उद्देश्य **'Ease of Innovation', 'Ease of Doing Research' और 'Ease of Science'** को बढ़ावा देना है, जिससे वैज्ञानिक समुदाय और स्टार्टअप्स को अधिक सहयोगात्मक और अनुकूल वातावरण मिल सके।

भारत में 'Ease of Doing Research' को बढ़ावा देने के लिए नीति सुधार-

क्या है 'Ease of Doing Research'?

- यह उन सुधारों को दर्शाता है जिनका उद्देश्य शोध कार्य को सरल, तेज़ और कम नौकरशाही बाधाओं वाला बनाना है।
- इसका मुख्य फोकस है शैक्षणिक और वैज्ञानिक संस्थानों में स्वायत्तता और लचीलापन बढ़ाना।

मुख्य नीति पहलें और विशेषताएँ:

1. **GeM के बाहर खरीद की अनुमति:**
   - अब वैज्ञानिक संस्थान विशेष वैज्ञानिक उपकरणों की खरीद के लिए सरकारी ई-मार्केटप्लेस (GeM) को बायपास कर सकते हैं।
   - इससे ऐसे उपकरणों की खरीद तेज़ होगी जो GeM पर उपलब्ध नहीं हैं।
2. **संस्थागत प्रमुखों को अधिक स्वायत्तता:**
   - अब विश्वविद्यालयों के कुलपति और संस्थान निदेशक ₹200 करोड़ तक की ग्लोबल टेंडर इनक्वायरी (GTE) स्वीकृत कर सकते हैं।
   - इससे निर्णय लेने में तेजी आएगी।
3. **वित्तीय सीमाओं में वृद्धि:**
   - **सीधी खरीद की सीमा:** ₹1 लाख → ₹2 लाख
   - **विभागीय समिति से खरीद की सीमा:** ₹1-10 लाख → ₹2-25 लाख
   - **सीमित/विज्ञापित निविदा की सीमा:** ₹50 लाख → ₹1 करोड़
4. **R&D में विलंब को कम करना:**
   - ये सुधार उन प्रमुख समस्याओं को हल करते हैं जैसे:
     - खरीद प्रक्रियाओं में देरी, अनुमोदन में जटिलता, छूट प्रक्रिया में बाधाएँ
5. **ट्रस्ट-बेस्ड गवर्नेंस मॉडल:**
   - सुधारों का आधार "भरोसे और जवाबदेही" का मॉडल है।
   - इससे संस्थानों को स्वतंत्र और जिम्मेदार तरीके से अनुसंधान व्यय करने में मदद मिलेगी।

भारत में अनुसंधान एवं विकास (R&D) की स्थिति –

सरकारी निवेश: भारत का कुल R&D खर्च (GERD) 2010-11 में ₹60,196.75 करोड़ से बढ़कर 2020-21 में ₹1,27,380.96 करोड़ हो गया।

- GDP के मुकाबले GERD केवल 0.7% है, जो वैश्विक औसत से कम है।

वित्त पोषण का स्रोत: लगभग 63% निवेश सार्वजनिक क्षेत्र से आता है, जबकि निजी क्षेत्र का योगदान मात्र 7% है।

- 2025-26 के बजट में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग को ₹20,000 करोड़ आवंटित किए गए हैं, जिससे निजी क्षेत्र आधारित R&D फंड शुरू किया जाएगा।

अनुसंधान अवसंरचना: IITs और IISc जैसे संस्थान उन्नत सुविधाओं और उच्च गुणवत्ता वाले शोध कार्य के लिए प्रमुख हैं।

- भारत उच्च शिक्षा में दुनिया में तीसरे स्थान पर है (अमेरिका और चीन के बाद)।

शोध निष्कर्ष: भारत शोध प्रकाशनों में तीसरे स्थान पर है (2022 में 3 लाख से अधिक), लेकिन शोध की गुणवत्ता और प्रभाव में सुधार की आवश्यकता है।

- पेटेंट फाइलिंग में भारत 6वें स्थान पर है, परंतु शोध को व्यावसायिक उत्पाद में बदलने की क्षमता सीमित है।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग: भारत वैश्विक अनुसंधान साझेदारियों में सक्रिय है, लेकिन अंतरराष्ट्रीय फंडिंग प्राप्त करने में चुनौतियाँ बनी हुई हैं।

सुधारों का महत्व:

तेजी से प्रोजेक्ट निष्पादन: नौकरशाही देरी में कमी से वैज्ञानिक शोध तेजी से आगे बढ़ सकेंगे।

स्टार्टअप्स और शोधार्थियों को बढ़ावा: उच्च स्तरीय उपकरणों तक आसान पहुंच, युवा नवाचारकर्ताओं को प्रेरित करेगी।

R&D निवेश को प्रोत्साहन: यह नीति सार्वजनिक व निजी क्षेत्रों के R&D सहयोग के लिए अनुकूल माहौल का संकेत देती है।

नई शिक्षा नीति (NEP 2020) का समर्थन: बहु-विषयक शोध और छात्र-आधारित अनुसंधान को बढ़ावा देती है।

$100 अरब विज्ञान अर्थव्यवस्था का निर्माण: स्पेस और न्यूक्लियर क्षेत्र की तरह सभी शोध क्षेत्रों में उदारीकरण की सफलता दोहराने का लक्ष्य।

परमाणु दायित्व कानून / Nuclear Liability Law

संदर्भ:

भारत अपने परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में विदेशी निवेश को आकर्षित करने के लिए **परमाणु दायित्व कानून (Nuclear Liability Law)** में संशोधन की योजना बना रहा है।

- इस प्रस्तावित बदलाव का उद्देश्य आपूर्तिकर्ताओं की जिम्मेदारी (supplier liability) को सरल बनाना है, ताकि निवेशकों का भरोसा बढ़ाया जा सके और देश की बढ़ती ऊर्जा जरूरतों को पूरा करने के लिए परमाणु ऊर्जा को गति मिल सके।

भारत की न्यूक्लियर दायित्व रूपरेखा-

1. नागरिक परमाणु क्षति के लिए दीवानी दायित्व अधिनियम, 2010 (CLNDA) परमाणु दुर्घटना की स्थिति में शीघ्र मुआवज़े के लिए कानूनी आधार प्रदान करता है।

2. ऑपरेटर की जिम्मेदारी:

- न्यूक्लियर क्षति के लिए सख्त और विशेष रूप से ऑपरेटर की जिम्मेदारी तय करता है।
- अधिकतम दायित्व: ₹1,500 करोड़।

3. सरकारी जिम्मेदारी:

- ₹1,500 करोड़ से अधिक के दावों को सरकार द्वारा पूरा किया जाएगा।
- कुल अतिरिक्त दायित्व: ~₹2,300 करोड़ (Convention on Supplementary Compensation - CSC के अनुरूप)।

4. बीमा अनिवार्यता: ऑपरेटरों को अनिवार्य रूप से बीमा करवाना होता है ताकि पीड़ितों को शीघ्र मुआवज़ा मिल सके।

5. अंतरराष्ट्रीय समझौते में भागीदारी:

- भारत ने **CSC (Convention on Supplementary Compensation)** पर 1997 में हस्ताक्षर किए।
- **2016 में इसका अनुमोदन (ratification)** किया गया।
- CLNDA पहले ही 2010 में लागू हो चुका था।

परमाणु क्षति नागरिक दायित्व अधिनियम, 2010 से जुड़ी मुख्य चिंताएँ (CLNDA):

1. **आपूर्तिकर्ता दायित्व की चिंता:**
   - अस्पष्ट बीमा नियम, "परमाणु क्षति" की परिभाषा में अस्पष्टता और धारा 46 के तहत दीवानी मुकदमों की आशंका से विदेशी व घरेलू आपूर्तिकर्ता हिचकते हैं।
   - धारा 17(b) दोषपूर्ण उपकरण या जानबूझकर की गई गलती पर आपूर्तिकर्ता को उत्तरदायी ठहराती है।
2. **विदेशी निवेश में बाधा:**
   - CLNDA की शर्तें अंतरराष्ट्रीय मानकों (CSC) से कठोर हैं, जिससे अमेरिका जैसे देशों के साथ परमाणु समझौते प्रभावित हुए हैं।

3. स्वच्छ ऊर्जा लक्ष्य में रुकावट:

- यह कानून निवेशकों का विश्वास कमजोर करता है और परमाणु ऊर्जा क्षेत्र की वृद्धि धीमी करता है, जो 2030 तक 500 GW नॉन-फॉसिल लक्ष्य के लिए जरूरी है।
- जैतापुर जैसी बड़ी परियोजनाएँ (9.6 GW) देरी का शिकार हैं, जबकि परमाणु ऊर्जा का योगदान केवल 3% है।

कानूनी अनिश्चितता से प्रभावित प्रमुख परियोजनाएँ:

1. **जैतापुर परियोजना (महाराष्ट्र):** 2009 में फ्रांस की कंपनी AREVA से समझौता (MoU), बाद में EDF से।
   - EDF ने कानूनी जोखिम पर चिंता जताई, परियोजना अभी भी ठप।
2. **कोव्वाडा परियोजना (आंध्र प्रदेश):** भारत-अमेरिका सहयोग प्रस्तावित, लेकिन आपूर्तिकर्ता दायित्व को लेकर प्रगति रुकी।
3. **केवल एक सक्रिय विदेशी भागीदारी:** रूस समर्थित **कुडनकुलम परमाणु संयंत्र**, जो CLNDA से पहले आरंभ हुआ था।

भारत के न्यूक्लियर लायबिलिटी कानून से जुड़ी मुख्य समस्याएँ:

1. **आपूर्तिकर्ताओं की भागीदारी में हिचकिचाहट:** विदेशी आपूर्तिकर्ता अनिश्चित और असीम दावों की आशंका से पीछे हटते हैं।
2. **अनुबंध बनाम कानून टकराव:** अनुबंध में उल्लेख न होने पर भी धारा 17(b) और 46 आपूर्तिकर्ताओं को उत्तरदायी बनाती हैं, जिससे नियामकीय टकराव उत्पन्न होता है।
3. **बीमा को लेकर अस्पष्टता:** आपूर्तिकर्ता को कितनी बीमा राशि सुरक्षित रखनी है, यह स्पष्ट नहीं – जिससे वित्तीय योजना प्रभावित होती है।
4. **नीतिगत विरोधाभास:** सरकार कानून को CSC के अनुरूप बताती है, लेकिन अदालतें विधायी मंशा की बजाय लिखित क़ानून को आधार बनाती हैं।

SIPRI रिपोर्ट 2025 / SIPRI Report 2025

संदर्भ:

जून 2025 में स्वीडन के सोलना स्थित स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट (SIPRI) ने अपना नवीनतम वार्षिक वर्षपुस्तक Yearbook 2025: Armaments, Disarmament and International Security जारी किया। इस रिपोर्ट में बताया गया है कि परमाणु क्षमताओं के मामले में भारत अभी भी पाकिस्तान पर बढ़त बनाए हुए है। रिपोर्ट के अनुसार, भारत ने अपने परमाणु हथियारों की संख्या 2024 के 172 से बढ़ाकर 2025 में लगभग 180 कर ली है (जनवरी 2025 तक)।

वैश्विक परमाणु रुझान 2025 – प्रमुख निष्कर्ष (SIPRI रिपोर्ट के अनुसार):

कुल परमाणु हथियार स्थिति (Global Nuclear Arsenal):

- **कुल परमाणु हथियार (2025):** 12,241
- **सैन्य स्टॉकपाइल (सक्रिय/संभावित):** 9,614
- **तैनात हथियार:** 3,912
- **हाई-अलर्ट पर बैलिस्टिक मिसाइलें:** लगभग 2,100 (मुख्यत: अमेरिका और रूस)

World nuclear forces, January 2025

	Deployed warheads[a]	Stored warheads[b]	Military stockpile[c]		Retired warheads[d]		Total ir
	2025	2025	2024	2025	2024	2025	2024
United States	1 770	1 930	3 708	3 700	1 620	1 477	5 328
Russia	1 718	2 591	4 380	4 309[f]	1 200	1 150	5 580
United Kingdom	120	105	225	225	–	–	225
France	280	10	290	290	–	–	290
China	24	576	500	600	–	–	500
India	–	180	172	180	–	–	172
Pakistan	–	170	170	170	–	–	170
North Korea	–	50	50	50[g]	–	–	50
Israel	–	90	90	90	–	–	90
Total	3 912	5 702	9 585	9 614	2 820	2 627	12 405[h]

भारत और पड़ोसी देशों की स्थिति:

- **भारत:** 180 परमाणु हथियार (जनवरी 2025 तक, सभी संग्रहीत)
- **पाकिस्तान:** 170 परमाणु हथियार (अनुमानित)
- **चीन:** 600 परमाणु हथियार
  इनमें से 24 हथियार तैनात या मिसाइलों/सक्रिय अड्डों पर स्थित

आधुनिकीकरण और विस्तार:

- **9 परमाणु संपन्न देश (अमेरिका, रूस, यूके, फ्रांस, चीन, भारत, पाकिस्तान, उत्तर कोरिया, इज़राइल)** सभी ने 2024 में अपने हथियारों का तेज़ी से आधुनिकीकरण किया।
- **भारत:**
  - परमाणु स्टॉकपाइल में हल्का विस्तार
  - **नए परमाणु डिलीवरी सिस्टम** विकसित किए गए (बेहतर क्षमताओं के साथ)
- **पाकिस्तान:**
  - नए हथियार प्रणालियों का विकास जारी
  - अधिक **फिसाइल पदार्थ** जमा किया – स्टॉकपाइल बढ़ाने का संकेत
- **चीन:** अत्यधिक विस्तार दर जारी – **2023 से हर साल ~100 नए हथियार** जोड़े

नई उभरती चुनौतियाँ (Emerging Threats):

- **आधुनिक तकनीकें:** AI, साइबर क्षमताएं, अंतरिक्ष टेक्नोलॉजी, मिसाइल डिफेंस, क्वांटम कंप्यूटिंग – ये सभी परमाणु अस्थिरता को बढ़ाने वाले तत्व बनते जा रहे हैं।
- **हथियार नियंत्रण संकट में:** New START संधि 2026 की शुरुआत तक लागू है, लेकिन इसे नवीनीकृत या प्रतिस्थापित करने के कोई संकेत नहीं हैं।

SIPRI: स्टॉकहोम इंटरनेशनल पीस रिसर्च इंस्टीट्यूट:

sipri

STOCKHOLM INTERNATIONAL PEACE RESEARCH INSTITUTE

स्थापना और मुख्यालय:

- **स्थापना वर्ष:** 1966
- **मुख्यालय:** स्टॉकहोम, स्वीडन
- **प्रकार:** स्वतंत्र अंतरराष्ट्रीय अनुसंधान संस्थान

कार्यक्षेत्र:

- संघर्ष (conflict), शस्त्रीकरण (armaments), शस्त्र नियंत्रण (arms control), और निरस्त्रीकरण (disarmament) पर अनुसंधान
- **डेटा, विश्लेषण और सिफारिशें** उपलब्ध कराता है – नीति-निर्माताओं, शोधकर्ताओं, मीडिया और आम जनता के लिए
- सभी रिपोर्टें **खुले स्रोतों (open sources)** पर आधारित होती हैं

वित्तपोषण (Funding):

- स्वीडिश संसद के निर्णय के आधार पर स्थापित किया गया
- **स्वीडन सरकार से वार्षिक अनुदान** प्राप्त होता है
- अनुसंधान गतिविधियों के लिए अन्य संगठनों से भी आर्थिक सहायता प्राप्त करता है

फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स / FATF

संदर्भ:

फाइनेंशियल एक्शन टास्क फोर्स (FATF) ने पहलगाम आतंकी हमले की कड़ी निंदा की है और कहा है कि यह हमला बिना आर्थिक सहायता के संभव नहीं था। यह पहली बार है जब FATF ने "राज्य प्रायोजित आतंकवाद" (State-Sponsored Terrorism) को आतंकवादी फंडिंग का स्रोत के रूप में औपचारिक रूप से स्वीकार किया है, जो वैश्विक आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में एक महत्वपूर्ण मोड़ माना जा रहा है।

FATF (Financial Action Task Force): मुख्य जानकारी-

परिचय: FATF एक अंतर-सरकारी संगठन है, जो मनी लॉन्ड्रिंग (Money Laundering), आतंकवाद वित्तपोषण (Terrorist Financing) और परमाणु प्रसार वित्तपोषण (Proliferation Financing) के विरुद्ध वैश्विक कार्रवाई का नेतृत्व करता है।

इतिहास: 1989 में G7 देशों द्वारा इसकी स्थापना मनी लॉन्ड्रिंग के उपायों को विकसित करने के लिए की गई थी।

- 2001 में आतंकवाद वित्तपोषण को भी इसके दायरे में जोड़ा गया।

सदस्यता:

- वर्तमान में 39 सदस्य हैं (37 देश + 2 क्षेत्रीय संगठन: *European Commission* और *Gulf Cooperation Council*)
- भारत 2010 में सदस्य बना।
- रूस की सदस्यता 24 फरवरी 2023 को निलंबित की गई, पहले कुल 40 सदस्य थे।

मुख्यालय: FATF सचिवालय *OECD मुख्यालय, पेरिस* में स्थित है।

कार्य और अधिकार:

- FATF देशों को चेतावनी देने, निगरानी करने और आवश्यक होने पर *Blacklisting* जैसी कार्रवाई करने की शक्ति रखता है, यदि कोई देश इसके मानकों का पालन नहीं करता।
- यह संगठन वैश्विक वित्तीय पारदर्शिता और सुरक्षा सुनिश्चित करने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है।

पोर्टुलाका भारत / Portulaca bharat

संदर्भ:

हाल ही में जयपुर के निकट अरावली की चट्टानी और अर्ध-शुष्क पहाड़ियों में एक नई फूलदार पौधों की प्रजाति की खोज हुई है, जिसका नाम ***Portulaca bharat*** रखा गया है। यह पौधा अपनी असामान्य बनावट और जैविक विशेषताओं के कारण विशिष्ट माना जा रहा है और भारत की जैव विविधता में एक महत्वपूर्ण जुड़ाव के रूप में देखा जा रहा है।

नया पुष्पाहार: *Portulaca bharat* की खोज:

- यह एक अनूठा फ़्लॉवरिंग प्लांट है, जिसे हाल ही में जयपुर के पास अरावली की चट्टानी एवं अर्ध-शुष्क धरातल में खोजा गया।
- नामकरण '**bharat**' इस देश की जैव-संपदा को वर्णित करने का प्रतीक है।
- यह पोर्टुलाका उप-गण **Neossia** का हिस्सा है, जिसके केवल करीब 10 पौधे गैल्टाजी पहाड़ियों में मिले
- आकार और संरचना में अनोखे—इसके समांतर वृत्ताकार पत्ते, हलके **पीले फूल** जो शीर्ष पर **क्रीमी सफ़ेद** हो जाते हैं, ग्रंथि वाले बाल व मोटे जड़ प्रणाली जैसी विशेषताएँ हैं।
- फिलहाल IUCN की **"Data Deficient"** श्रेणी में रखा गया है, क्योंकि इसकी आबादी और वितरण पर पर्याप्त जानकारी उपलब्ध नहीं है

महत्व: यह खोज न केवल भारत की अंत:स्थानीय प्रजातियों (endemics) की सूची में एक नया नाम जोड़ती है, बल्कि यह उन अनोखे पारिस्थितिकी तंत्रों की ओर भी संकेत करती है, जिन्हें संरक्षण की सख्त जरूरत है – खासकर अरावली जैसे जैव विविधता समृद्ध, लेकिन संकटग्रस्त क्षेत्र।

अंतर्राष्ट्रीय बिग कैट एलायंस / IBCA

संदर्भ:

अंतर्राष्ट्रीय बिग कैट अलायंस (IBCA) के पहले समापन समारोह में पर्यावरण मंत्री भूपेन्द्र यादव को इस गठबंधन का राष्ट्रपति चुना गया।

अंतर्राष्ट्रीय बिग कैट एलायंस (IBCA):

स्थापना और वैधानिक स्थिति-

- **स्थापना:** 2024 में **राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (NTCA)**, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के तहत।
- **कानूनी इकाई बना:** पाँच देशों—**निकारागुआ, एस्वातिनी, भारत, सोमालिया और लाइबेरिया**—द्वारा **फ्रेमवर्क एग्रीमेंट** पर हस्ताक्षर के बाद।
- **कुल सदस्य देश:** 95 **रेंज देशों** की साझेदारी (जहाँ ये बिग कैट्स प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं)।

संरक्षण के लिए लक्षित 7 बड़ी बिल्लियाँ-

1. बाघ (Tiger)
2. शेर (Lion)
3. तेंदुआ (Leopard)
4. हिम तेंदुआ (Snow Leopard)
5. चीता (Cheetah)
6. जैगुआर (Jaguar)
7. प्यूमा (Puma)

उद्देश्य-

- **सहयोग और समन्वय को बढ़ावा देना:** सभी हितधारकों के बीच सहयोग को सुविधाजनक बनाना।
- **संरक्षण प्रथाओं का एकीकरण:** सफल प्रयासों का आदान-प्रदान और विशेषज्ञता साझा करना।
- **वैश्विक स्तर पर संरक्षण में सहयोग:** बड़े बिल्लियों की दीर्घकालिक और सतत सुरक्षा के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देना।

भारत की भूमिका:

- **भारत की नेतृत्वकारी भूमिका** को दर्शाता है वैश्विक वन्यजीव संरक्षण में।
- वन्यजीवों की सतत रक्षा के लिए **वैश्विक प्रतिबद्धता** को बल देता है।

ट्रेड डेफिसिट / Trade Deficit

संदर्भ:

भारत का व्यापार घाटा मई 2025 में घटकर $6.6 अरब रह गया, जो 2024 की तुलना में 30% कम है। इस कमी का मुख्य कारण कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट और सेवा निर्यात (Service Exports) में मजबूती रहा है।

मुख्य बिंदु:

- कुल निर्यात 2.8% बढ़कर **71.1 बिलियन डॉलर** हो गया, जबकि सेवा निर्यात **9.4% बढ़कर 32.4 बिलियन** डॉलर हो गया। हालांकि, वैश्विक तेल की कीमतों में गिरावट के कारण व्यापारिक **निर्यात 2.2% गिरकर 38.7 बिलियन डॉलर** हो गया।
- गैर-पेट्रोलियम निर्यात में 5.1% की वृद्धि हुई। व्यापारिक आयात में 1.7% की गिरावट आई, हालांकि गैर-पेट्रोलियम आयात में 10% की वृद्धि हुई।
- कुल मिलाकर, मई 2025 में कुल आयात में 1% की गिरावट आई।

ट्रेड डेफिसिट (Trade Deficit) क्या है?

- जब किसी देश का **आयात (imports)** उसके **निर्यात (exports)** से अधिक होता है, तब व्यापार घाटा होता है।
- इसमें **माल और सेवाएं दोनों** शामिल होते हैं।
- यह एक महत्वपूर्ण **सामाजिक-आर्थिक संकेतक** होता है।

ट्रेड डेफिसिट के कारण:

- **बचत और निवेश** के बीच असंतुलन
- **उच्च घरेलू मांग** और आयात पर निर्भरता
- **मुद्रा विनिमय दरों में उतार-चढ़ाव**
- **वैश्विक आर्थिक विकास**
- **मजबूत घरेलू मुद्रा** और **उपभोक्ता खर्च** से निर्यात में कमी और आयात में वृद्धि

प्रभाव:

सकारात्मक:

- उपभोक्ताओं को **सस्ते और विविध उत्पाद** मिलते हैं
- जीवन स्तर में सुधार संभव

नकारात्मक:

- **राष्ट्रीय ऋण** बढ़ सकता है
- **घरेलू उद्योगों** को नुकसान
- **रोज़गार में गिरावट**
- **मुद्रा अवमूल्यन** (depreciation)
- **आर्थिक अस्थिरता** और **नीतिगत दबाव**

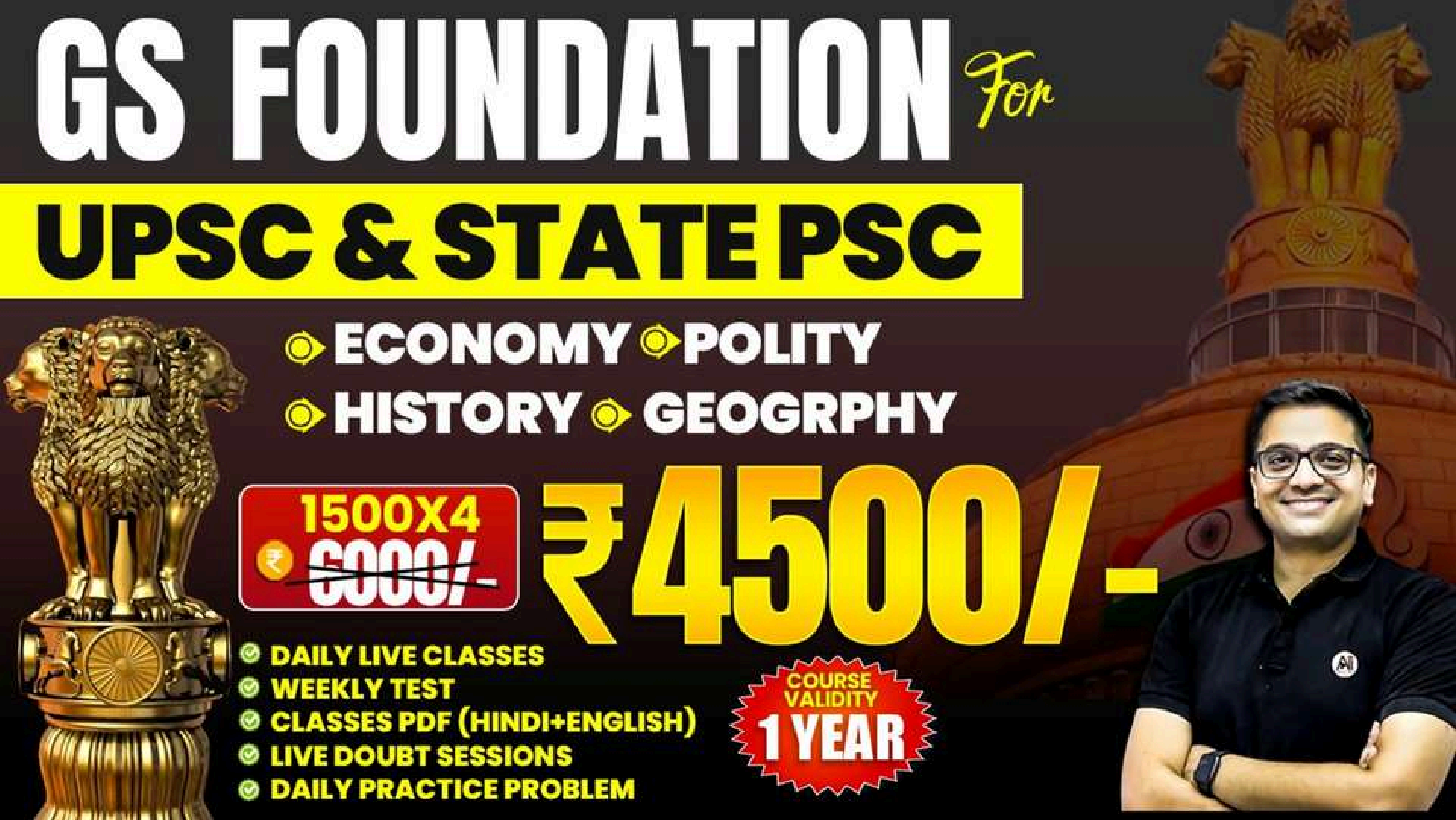
GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
ECONOMY
POLITY
HISTORY
GEOGRPHY
1500X4
₹ 6000/-
₹4500/-
DAILY LIVE CLASSES
WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTICE PROBLEM
COURSE VALIDITY
1 YEAR

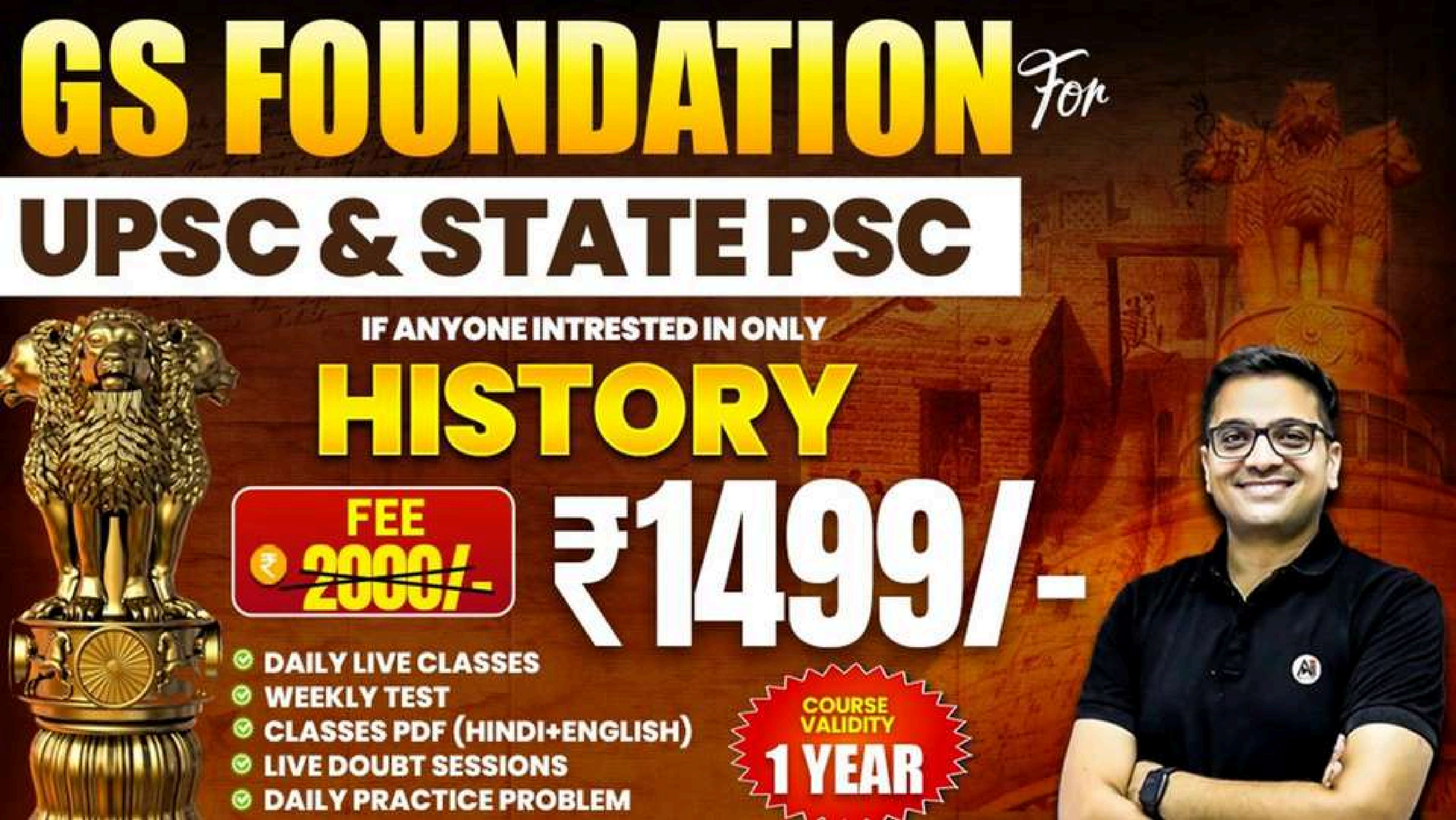
GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
IF ANYONE INTRESTED IN ONLY
HISTORY
FEE
₹ 2000/-
₹1499/-
DAILY LIVE CLASSES
WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTICE PROBLEM
COURSE VALIDITY
1 YEAR

GS FOUNDATION For
UPSC & STATE PSC
IF ANYONE INTRESTED IN ONLY
ECONOMY
FEE
₹ 2000/-
₹1499/-
DAILY LIVE CLASSES
WEEKLY TEST
CLASSES PDF (HINDI+ENGLISH)
LIVE DOUBT SESSIONS
DAILY PRACTICE PROBLEM
COURSE VALIDITY
1 YEAR

जानिए
भारतीय संविधान
CONSTITUTION OF INDIA
मात्र
1499/-Year
Enroll Now !
1 year validity

GS FOUNDATION
Hand Written Notes
Pathshala
भारतीय भूगोल
भौतिक तथा विश्व भूगोल
BEST OFFER
1999Rs
4 पुस्तकों का
सम्पूर्ण सेट
अधिक जानकारी के लिए दिए
गए नंबर पर संपर्क करें....
7878158882
Bilingual
By Ankit Avasthi Sir

UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
और अन्य सभी सरकारी परीक्षाओं के लिए अति महत्वपूर्ण
RNA : Real News Analysis
MONTHLY CURRENT AFFAIRS
UPSC, STATE PCS, SSC, RAILWAY, BANKING, DEFENCE,
MONTH
जनवरी, 2025
By Ankit Avasthi Sir
MONTHLY MAGAZINE
FREE!
अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....
7878158882
Billingual
ANKIT AVASTHI SIR

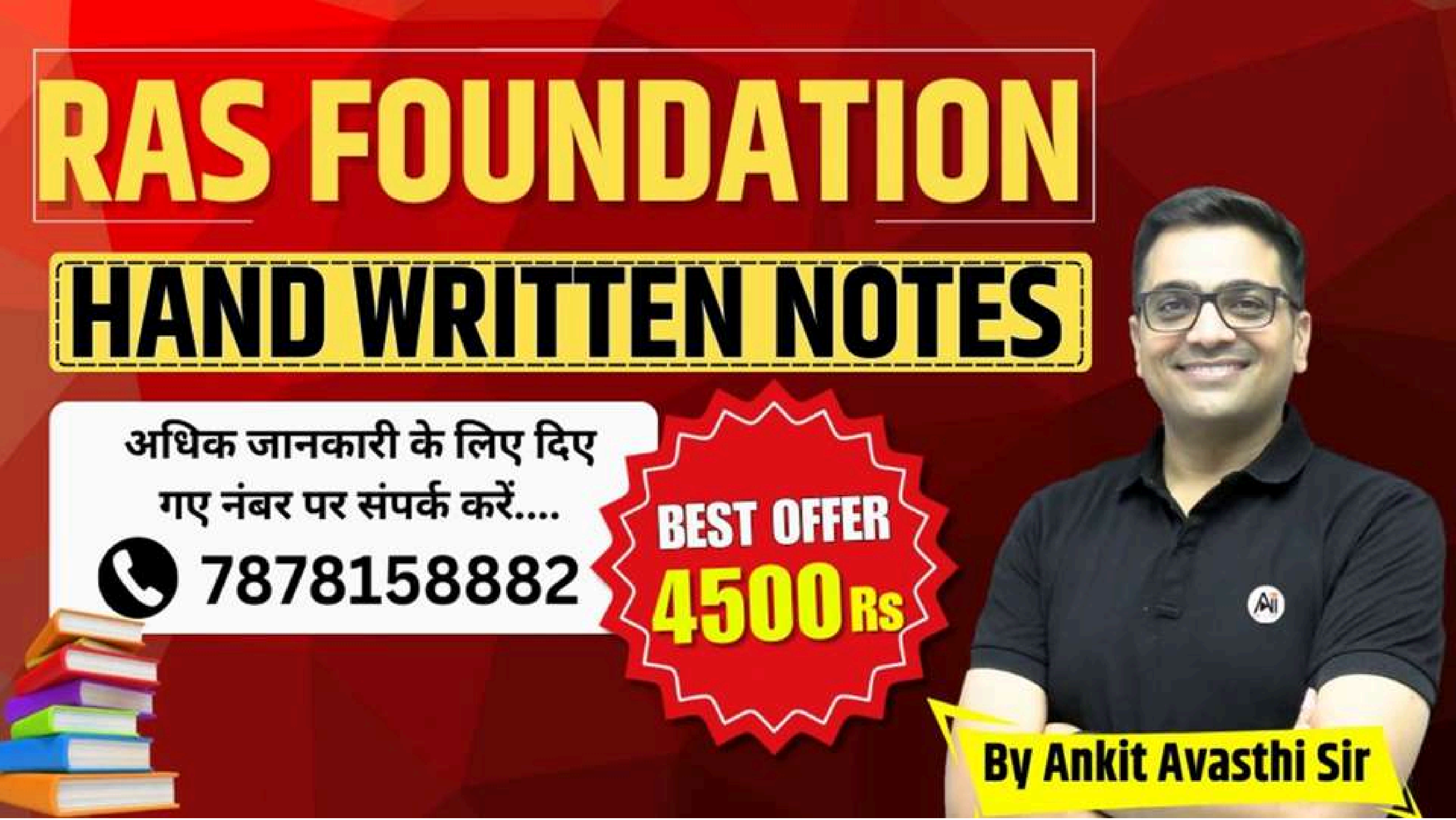
RAS FOUNDATION
HAND WRITTEN NOTES
अधिक जानकारी के लिए दिए गए नंबर पर संपर्क करें....
7878158882
BEST OFFER
4500 Rs
By Ankit Avasthi Sir

RRB NTPC
TEST SERIES
100+ Mock Test
78 Sectional Test
40+ years PYPs
60+ Current affairs
TEST
Only
99
Per
Year
Buy Now

APNI PATHSHALA

UPPSC,RO/ARO,BPSC,UP TEST SERIES

UPPSC
(TEST SERIES)
- 35+ MOCK TESTS
- 40+ PYQ'S
- 180+ TOPIC WISE TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

299/- YEAR

RO/ARO
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299/- YEAR

BPSC
(TEST SERIES)
- 50+ MOCK TESTS
- 30+ PYQ'S
- 10+ TOPIC WISE TEST
- 65+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 299 YEAR

SSC (TEST SERIES)
- 30 MOCK TESTS
- 28+ YEAR PYP
- 12 SECTIONAL TEST
- 60+ CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

RPF (TEST SERIES)
- 40 MOCK TESTS
- 2 YEAR PYQ'S
- 4 SECTIONAL TEST
- 10 PRACTICE TEST
- 60 CURRENT AFFAIRS

ONLY 99/- YEAR

Download | Application
Apni Pathshala
7878158882

Apni.Pathshala Avasthiankit
AnkitAvasthiSir kaankit

ANKIT AVASTHI SIR

CALL CENTRE

HOW MAY I HELP YOU

7878158882

AnkitInspiresIndia

Download "Apni Pathshsla" app now!

Follow us: